

जय राम जय राम

जय राम जय राम

सत्य साहित्य

*Celebrating Birth Centenary*



1920-2020

जय राम जय राम

सत्य साहित्य, श्री रामशरणम् इन्टरनेशनल सेन्टर, नई दिल्ली की एक त्रैमासिक पत्रिका  
वर्ष 3 / अंक 2, जनवरी 2020 • Year 3/ No. 2, January 2020

# सर्व शक्ति परमात्मने श्री रामाय नमः

मंगल-मन्दिर खोलते दयामय २  
 शक्ति उत्कृष्टित दर्शन को जन,  
 खड़ा द्वार पर तेरे,  
 महा मनोहर राम नाम में,  
 मूर्तिमान् हरि होलौ ॥१॥  
 हो दिव्यदर्शन देव-देव जी,  
 दया-दृष्टि से देखो।  
 उर लगा उत्संग में ले कर,  
 प्रेम सूरों से बोलो ॥२॥  
 वरद वरतम कस्को फिरोओ,  
 सहित प्रेम पुत्रकारें।  
 निज बालक में कसलता है,  
 तनैह सुधारस होलौ ॥  
 ॥३॥

(परम पूजनीय स्वामी जी महाराज की डायरी से)

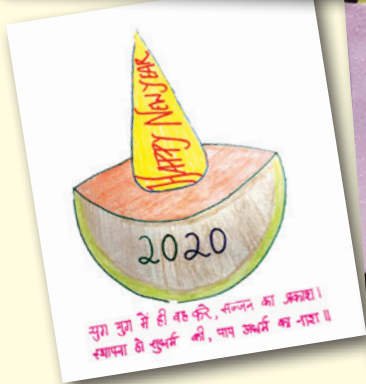
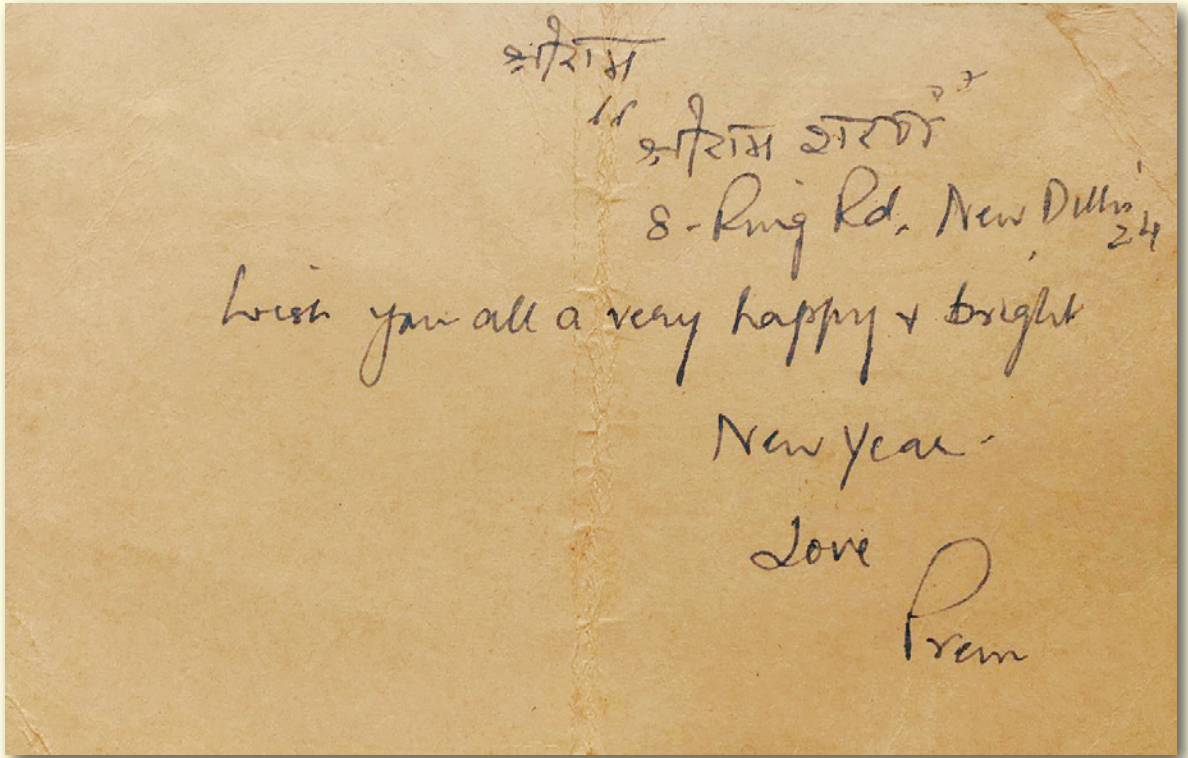
## इस अंक में पढ़िए

- भजन
- नए साल की बधाई
- Awakening
- निष्काम सेवा
- गुरु का वास्तविक रूप
- प्रथम दर्शन
- श्रीरामशरणम् : एक ऐतिहासिक विवरण
- अनुभूतियाँ
- विभिन्न केन्द्रों से
- कैलेन्डर
- बच्चों के लिए

सत्य साहित्य

मूल्य (Price) ₹5

# नए साल की बधाई!



(इन प्रवचनों में परम पूजनीय स्वामी जी महाराज ने साधकों को जागृत होने के लिए प्रोत्साहित किया है और इस जागृत अवस्था को प्राप्त करने के लिए आवश्यक मार्ग भी दिखाया है। इनमें प्रमुखतः आचरण, निष्काम सेवा और गुरु के वास्तविक रूप को पहचानने को महत्व दिया गया है।)



## Awakening

### सत्यानन्द

Awakened one has signs four, of his virtue-vice aware.  
Mindful of his offences, in fury does not flare. (5)

Awakened know him to be, whose life is aglow.  
Imbued in beneficence, with love of God does glow. (6)

In this world awake four, devotee of God is one.  
Pious wife ascetic servant, dharma who champion. (7)

Slumbering those in deep sleep, delusion pride and rage.  
Their wealth of wisdom virtues, loot and ravage. (8)

In the night of delusion, ignorance of sleep.  
Soul forgetful of itself, is lion-like asleep. (9)

Unknowing of own good, of duty incognisant.  
Know they are all asleep, very stubborn ignorant. (10)

\*\*\*\*

Forsaking devotional duty who, contentiously debate.  
Atheistic becomes they, very disconsolate. (17)

O mind why sleepest thou, awake and God's name take.  
Obey obey O do obey, languor sleep forsake. (18)

O mind arise and Ram repeat, asleep what shalt thou gain.  
By taking Supreme Lord's Name, desires all attain. (19)

O mind why sleep in vain, arise and recollect Name.  
Worth more than worlds three, thy every breath lays claim. (20)

\*\*\*\*

O mind in incessant sleep, much time has gone by.  
Awake and worship Ram, ignorance nullify. (25)

\*\*\*\*

Steeped in delusion ignorance, born many a time.  
Beloved! Holy Name repeat, with love sublime. (27)

\*\*\*\*

Wretch by vices overcome, from within depraved.  
Indolent lies fast asleep, how will he be saved. (29)

In swelling river of life, torrential desire deluge.  
To one drowning in delusion, the Lord gives refuge. (30)

Awakened now will slumber not, Ram Nam repeat.  
Constant remembrance will attain, stupor of ignorance forfeit. (31)

Test efficacy of thy resolve, Ram Nam repeat.  
Remain eternally vigilant, birth-death fear delete. (32)

*(Excerpts from Jagriti, Bhakti Prakash, pp. 270-272)*



## प्रेमरूप परमेश्वर के उपासक को सप्त साधन प्रति दिन करने चाहिये।

प्रथम साधन — स्नान, व्यायाम तथा स्वच्छ रहना

दूसरा साधन — पवित्र पाठ

तीसरा साधन — सत्संग

चौथा साधन — राम नाम का पतित पावन पुण्यमय जाप

पांचवां साधन — राम-प्रेम का प्रचार। हरि गीत गा कर प्रेम पूर्ण पदों का पाठ सुना कर तथा हरि चर्चा चला कर दूसरे जनों में श्री राम के पवित्र प्रेम को उत्पन्न करना प्रेम-प्रचार है

छठा साधन — उपासकों से, भगवद्भक्तों से प्रीतिपूर्वक बरताव

सातवां साधन — जन-सेवा और सहायता

ऊपर कहे सात साधन साधकों के लिये स्वर्ग के सोपान हैं, सुख के स्रोत हैं और प्रेम पथ में पूरे सहायक हैं।

*(प्रेम पथ, कथा प्रकाश, भक्ति प्रकाश पृ. 599)*

## निष्काम सेवा



जब कोई अच्छा काम करता है तो उसमें मान आ जाता है कि मैंने मेहनत की है, मेरी मेहनत सफल हुई है। हम समझें कि यह प्राप्त हुई है, यह नहीं समझना कि यह सफलता मेरी मेहनत के कारण है। अनेक आदमी मेहनत करते हैं सभी सफल नहीं होते यह तो परमेश्वर की कृपा समझनी चाहिए कि मेरे ऊपर उसने कृपा कर दी। मैं तो इस काबिल भी नहीं था, मेरे से अच्छे और भी होंगे। मेरी कामयाबी तो उसी की देन है। परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए। स्वभाव होना चाहिए कि हर काम में धन्यवाद करें। अगर बच्चा धन्यवाद करता है तो माँ खुश होती है। परमेश्वर बच्चों के लिए बहुत कुछ करते हैं। उसका तो ममत्व सबसे है। धन्यवाद करने से अपना भी मंगल होता है।

हर कदम पर वे कृपा करते हैं, यदि मुड़ कर देखें, कई ऐसे लोग होंगे जो इन चीजों को तरसते रहते हैं। ऐसे बहुत इन्सान मिलेंगे जो एक साधु से दूसरे साधु के पास जाते हैं, भटकते हैं। कोई ही ऐसे सौभाग्य वाले होते हैं जिनको परमेश्वर का सरल सीधा पथ मिल जाए। उसके लिए जितना परमेश्वर का, महाराज का धन्यवाद करें, थोड़ा होगा।

अगर परमेश्वर से हम कुछ माँगते हैं तो यह विश्वास होना चाहिए कि माँग वे पूरी करेंगे। अपनी कमियों को दूर करना चाहिए और प्रार्थना के माध्यम से दूसरों की कमियाँ भी दूर करें। यदि हम एक दूसरे की कमियाँ निहारते रहे तो वैर बढ़ता ही जाएगा। एक रस्सी इधर से खींचे और दूसरा उधर से तो रस्सी टूट जाएगी। या दोनों में से

कोई एक रस्सी छोड़ दे तो दूसरा गिर जाएगा। हठ नहीं करना। प्रार्थना ही करनी चाहिए। तू कृपा कर अपने रास्ते पर ले चल, जहाँ एक बार कृपा की वहाँ एक बार फिर करो।

यह आए दिन देखते हैं कि ज्योतिषियों के पास जाते हैं, बाधा आ जाए तो पूजा करवाते हैं। परन्तु जो दूसरे के लिए प्रार्थना करता है, उसे अवश्य लाभ होगा। दूसरे की आत्मा जग जाएगी, अपना भी लाभ होगा, उसका भी लाभ होगा। जितना भी हो सके, जहाँ अपने आपको ऊपर उठाते हैं, दूसरों को भी उठाएँ। निष्काम सेवा परमेश्वर का पूजन ही समझना चाहिए। आप जो शुभ कर्म करते हैं उससे शुभ का जो बीज बोते हैं उससे दूसरे पर जब कृपा होती है तो अपने पर भी होती है – यह भावना होनी चाहिए कि दूसरे के लिए कमाई करनी है। vibrations हैं जिसका दूर-दूर तक प्रभाव पड़ता है। एक लड़का होशियारपुर कॉलेज में पढ़ता था वह साधना सत्संग में नहीं गया था पर वह बताता था कि महाराज जी आज आपने यह धुन बोली मेरे ध्यान के समय यह मेरे कान में गूँज रही थी। ऐसा सत्संग कहाँ मिलेगा ? परमेश्वर को पाने का कोई ऐसा सरल रास्ता नहीं मिलेगा। महाराज जी का धन्यवाद समझना चाहिए कि परमेश्वर तेरे दरबार में हम सब इकट्ठे हैं। तेरी रोशनी से ऐसे जगमगाऊँ जैसे तू दूसरों को रोशनी देता है।

परमेश्वर तू सब पर कृपा कर, कृपा कर।

(परम पूजनीय प्रेम जी महाराज के प्रवचन, परम पूजनीय महाराज जी की डॉयरी से, हरिद्वार साधना सत्संग 10-4-1968 रात्रि 8-30) ■

## गुरु का वास्तविक रूप

१२०१/२०२१



गुरु या संत सांसारिक सुख का मार्गदर्शक नहीं होता। यदि अभी तक स्पष्ट नहीं हो पाया तो उसका अर्थ यह है कि उसने गुरु को वास्तविक रूप से नहीं जाना। गुरु या संत मार्गदर्शक है – कल्याण का मार्ग, उद्धार के मार्ग का – श्रेयस मार्ग जिसे कहा जाता है। कोई सच्चा गुरु, किसी भी साधक के लिए, सांसारिक सुख की प्रार्थना नहीं करता।

उड़िया बाबा बड़े मशहूर संत हुए हैं, उनके पास एक नेता जी आया करते। nomination से पहले भी आशीर्वाद लिए, nomination के बाद भी। जब प्रचार आदि होता है तो भी आशीर्वाद के लिए आते। election शुरू हो गया है और तब भी आशीर्वाद लेने आए और हार गए। जो शिष्य लोग थे उन्होंने प्रश्न किया, “बाबा! शुरु से अंत तक आपके आशीर्वाद लिए और फिर भी हार गए तो आपके आशीर्वाद पर प्रश्न चिन्ह।” हम सब भी तो ऐसे ही करते हैं। विवाह के लिए कार्ड भेजते हैं, आपको बधाई पत्र वापिस जाता है। एक वर्ष के अन्दर शादी टूट गई, उलाहना देते

हैं, आशीर्वाद लिए थे इत्यादि इत्यादि।

शिष्यों ने प्रश्न किया, “बाबा! आशीर्वाद पर प्रश्न चिन्ह।” उड़िया बाबा कहते, “बंधुओ ! मैंने हार या जीत के लिए आशीर्वाद दिया ही नहीं। मैं संत हूँ। संत किस बात के लिए आशीर्वाद देता है? इस बात के लिए कि परमात्मा जिसमें इसका हित हो, जिसमें कल्याण हो, वह हो।” यह संताई है, यह गुरुत्व है। इससे पहले यह स्पष्ट नहीं था तो आज इस बात को पल्ले बाँध लो। गुरु के प्रति गुरुत्व बनते ही आपको कुछ माँगने की जरूरत नहीं पड़ती। आपकी श्रद्धा के कारण लेने वाली चैनल अपने आप खुल जाती है। आशीर्वाद गुरु से, संत से माँगने की जरूरत नहीं होती, न ही गुरु से, न ही परमात्मा से। आपको अपना द्वार खोलने की जरूरत है वह तो प्रवाहित होता है। पानी पाईप में चल रहा है आप अपने घर की टूटी खोलोगे तो पानी आएगा। पाईप में तो पानी आ ही रहा है। आगे भी जा ही रहा है।

संत से सांसारिक सुख की माँगें रखना, उसकी संताई का दुरुपयोग करना है। सांसारिक सुख की निवृत्ति तो – जैसे रोग हुआ डॉक्टर को दिखाया, फर्क नहीं पड़ा दूसरे के पास गए। एक हस्पताल में गए फर्क नहीं पड़ा, दूसरे बड़े हस्पताल में गए। ठीक होने पर सुख मिला। यह सुख तो संसार से मिल सकता है। उसी प्रकार, जैसे व्यापार में घाटा पड़ गया तो आप बैंक लोन ले लेते हो और वह पूरा हो जाता है। किसी धनवान से ले लिया घाटा तो पूरा हो जाता है। थोड़ी देर के लिए दुःख हुआ और वह दूर हो गया। ये दुःख तो संसार से दूर हो सकते हैं लेकिन महा दुःख इस संसार से दूर नहीं होता। इसके लिए गुरु या संत की आवश्यकता हुआ करती है। शाश्वत सुख, अखण्ड सुख जिसे कहा जाता है वह सुख परमात्मा के पास ही है पर मिलेगा गुरु या संत के माध्यम से। गुरु का या संत का प्रयोग इसी के लिए करना चाहिए। यह शास्त्र का विधान है। परमात्मा दाता है। निःसन्देह परमात्मा सब

चीजों का स्रोत है। सब चीजों का दाता परमात्मा है लेकिन मिलता संत के माध्यम से, गुरु के माध्यम से ही है। यह उसका विधान है। समझदार शिष्य वह है जो जानता है कि गुरु या संत का प्रयोग उसे किस काम के लिए करना है। संत या गुरु सांसारिक सुख के लिए नहीं हैं।

संत कहता है कि कुछ पाना है तो संसार के पास जाओ और सब कुछ त्यागना है तो मेरे पास आओ। गुरु कहता है संसार यह नहीं कर सकेगा। गुरु के बिना कल्याण हो जाए, यह सम्भव नहीं। शास्त्र क्या कहता है ? जब तक सांसारिक सुख की चाह बनी रहेगी, आप डॉक्टर बन जाओ, engineer बन जाओ या, किसी कालेज में प्रोफेसर बन जाओ, director बन जाओ, बड़े वक्ता बन जाओ, बहुत बड़े कथा वाचक, बड़े लेखक बन जाओ, industrialist बन जाओ, अति धनवान बन जाओ, संसार में कुछ भी बन जाओ आप, आपको संसार तो मिल जाएगा लेकिन परम शान्ति नहीं मिलेगी।

एक ही शर्त रखी है परमात्मा ने। जब तक सांसारिक सुख की चाह बनी रहेगी उसको गुरु या संत मिटाएगा। “परमात्मा ! स्वयं यह नहीं कर पाता। तू तो सर्वसमर्थ है, मेरी तो तेरे तक पहुँच है मैं तो तुझ तक कह सकता हूँ। यह मेरी बात नहीं मान रहा, तू तो मेरी बात मानता है। तू तो मेरे ऊपर बड़ा कृपालु दयालु है। तू मेरे माध्यम से काम करता है, तो मैं तेरे माध्यम से काम करता हूँ। मेरी लाज रख, इसको मोह ममता से बाहर निकाल।” यह गुरु का, संत का काम है। जो ढंग गुरु बताता है, संत बताता है, वह कोई देशी या विदेशी नहीं बता सकता है, न ही मार्किट से वह युक्तियाँ मिलती हैं, वहाँ तो संसार ही मिलता है। ये तो असंसारी बातें हैं। जिस किसी में भी असंसारी बातें हों वह भला व्यक्ति है उसे संत कहो, महाराज कहो, कुछ कहो, आपकी इच्छा। कोई फर्क नहीं पड़ता।

इब्राहिम लिंकन जब राष्ट्रपति नहीं बने थे, बड़े गरीब

महा-दुःख दूर करने के लिए गुरु या संत की आवश्यकता हुआ करती है। शाश्वत सुख, अखण्ड सुख जिसे कहा जाता है वह सुख परमात्मा के पास ही है पर मिलेगा गुरु या संत के माध्यम से। गुरु का या संत का प्रयोग इसी के लिए करना चाहिए। यह शास्त्र का विधान है। परमात्मा दाता है। निःसन्देह परमात्मा सब चीजों का स्रोत है। सब चीजों का दाता परमात्मा है लेकिन मिलता संत के माध्यम से, गुरु के माध्यम से ही है। यह उसका विधान है।

थे। कहीं सेल्समैन की नौकरी करते थे, कहीं कुछ करते। छोटे आदमी को जगह-जगह से अपमान भी सहना पड़ता है, तिरस्कार भी सहना पड़ता। छोटा जो हुआ। ओए कहलाने योग्य-लोग कहते हैं ऐसा। तरह-तरह का अपमान सहा, तिरस्कार सहा, अनेक वैर विरोधी इर्द-गिर्द थे। पर अमेरिका जैसे देश के राष्ट्रपति बन गए। जो प्रशंसक नहीं भी

थे प्रशंसक हो गए। आसपास मटकने वाले लोगों ने इब्राहिम को कहा, “ये वही हैं जो आपका पिछले जीवन में अपमान करते रहे। ये आपके वैरी हैं, विरोधी हैं, अन्दर से शत्रु हैं ऊपर से मीठी बातें करते हैं। अब आप इन्हें कुचलो। अब आप सत्ता में हो जो चाहे कर सकते हो, इन्हें कुचलो।” इब्राहिम उनकी बात सुन लेते पर जब कभी उनके उन विरोधियों को कोई जरूरत होती तो उनकी जरूरत पूरी करते। लोग कहते, उन शत्रुओं को जिन्होंने आपका वैर विरोध अपमान किया हुआ है आप इन वैरियों की सहायता क्यों करते हो ? इब्राहिम के मन में उनके प्रति हृदय में वैर विरोध शत्रुता नहीं है। इब्राहिम कहते, “वही तो कर रहा हूँ, जो शत्रुता मेरे प्रति है वह बाहर से कुचलने से कुचली नहीं जाएगी मैं तो उनके अन्दर की शत्रुता वैर विरोध को कुचल रहा हूँ।” भला आदमी ! ऐसे ही व्यक्ति को भला आदमी कहा जाता है।

सारे शास्त्रों का सार है, Be Good, Do Good. वेद सार, गीता सार, उपनिषद सार – सारे शास्त्रों का सार है Be Good, Do Good। क्रम याद रखना। पहले भले बनो, फिर भला करना। पहले भला करने लग जाओगे तो वह उदाहरण है न, यदि गंदे हाथ से पुस्तक उठाओगे तो पुस्तक गंदी न हो, यह हो नहीं सकता। इसलिए पहले हाथ साफ करो फिर पुस्तक उठाओ तो पुस्तक साफ रहेगी। जो भी प्रचारक, अध्यक्ष इत्यादि यहां बैठे हैं मेहरबानी करके अपना आत्मनिरीक्षण करते रहा करो। जहाँ कहीं दोष दिखाई दें, उन्हें सफाई करते रहो। फिर आप किसी को भी हाथ लगाओगे तो



उन्हें गंदगी नहीं लगेगी। भले बनो, फिर भला करो। भद्रतनु नामक एक ब्राह्मण बालक—छोटी आयु में अनाथ हो गया। सिर पर पिता का साया नहीं, तो माँ का प्यार भी नहीं तो ऐसे में बच्चे अकसर बिगड़ जाते हैं। इसीलिए माता—पिता का साया सिर पर होना बहुत जरूरी है। माँ की भूमिका पुत्र के जीवन में थोड़ी अलग और पिता की भूमिका बड़ी अलग है। दोनों की भूमिकाएँ अपने—अपने स्थान पर उच्चतम। माँ ममता की मूर्ति है तो पिता ममता में न उलझ कर, उसका भला किसमें है वह देखता है। कहीं डाँटता भी है, डपटता भी है तो कभी मारता भी है। पिता पुत्र का हरेक कहना नहीं मानता, पिता देखता है इसमें, पुत्र की भलाई नहीं है, माँ ममता के कारण साथ दे रही है अतः मेरा कर्तव्य यही है।

भद्रतनु, इसके ऊपर न माँ का, न बाप का साया। पढ़ लिख नहीं सका, सत्संग की ओर नहीं मुड़ा, बदकिस्मती कि कुसंगति की ओर पैर मुड़ गए। कुसंग में पड़ गया। ब्राह्मण बालक है, ब्राह्मण के घर जन्म लेना मानो कितने सुसंस्कार होंगे कि जो परमात्मा ने ब्राह्मण के घर जन्म दिया, उच्चतम जाति में।

ब्राह्मण के घर जन्म ले कर भी कोई कर्म ब्राह्मण वाला नहीं है। माँस खाता है, शराब पीता है, शुक है परिवार नहीं है। नहीं तो परिवार के नाक में दम कर देता। चोरी की आदत, जुए की आदत, नगर के बाहर एक वेश्या का स्थान है उसके पास निरन्तर आना जाना बन गया। वेश्या भी परेशान है, जानती है कि ब्राह्मण युवक है, अतएव समय मिलने पर उसे समझाती है—वेश्या। कहती, “मेरा तो यह व्यवसाय हो गया, मैं तंग हूँ इससे मैं इससे विवश हूँ। मैं तो निकल नहीं पा रही, विवश हूँ, तेरी तो विवशता नहीं, तू मूर्ख न बन। क्या मुख दिखाएगा, परमात्मा के दरबार में जाकर ? ब्राह्मण के घर जन्म हुआ पर तेरे कोई कर्म ब्राह्मण वाले नहीं। मेरे पास आना तेरा कुत्सित कर्म, तेरी दुर्दशा होगी तू सोच नहीं रहा, इसलिए मेहरबानी कर कोई सोच विचार कर। वह समझाती रहती उसे कोई फर्क नहीं पड़ता। कुसंगति का इतना प्रभाव है कुसंस्कारों का इतना प्रभाव उसके ऊपर कि, वह निकल नहीं पा रहा। कोई भी उसका व्यसन ठीक नहीं हो रहा। शराब डट कर पीता है, वेश्या के घर रोज बिना नागा आना एक

नियम उसने बना रखा है। इस नियम को भद्रतनु तोड़ नहीं पा रहा। वेश्या भी थक गई, एक शिक्षा गुरु की भूमिका निभा रही है वेश्या। जो कुछ सिखाने वाला है वह शिक्षा गुरु। सिखाने वाले शिक्षा गुरु अनेक हो सकते हैं कोई English, Economics कोई Engineering और कोई डॉक्टरी पढ़ाने वाला। ये सब शिक्षा गुरु हैं। ज़िन्दगी में दीक्षा गुरु एक ही होता है, शास्त्र कहता है, शिक्षा गुरु अनेक लेकिन दीक्षा गुरु ज़िन्दगी में एक ही होता है। उसी को आध्यात्मिक गुरु कहा जाता है। उसका स्थान अद्वितीय है, उसके जैसा स्थान और किसी का नहीं।

भद्रतनु मान नहीं रहा। आज उसके पिता का श्राद्ध। श्रद्धाहीन व्यक्ति क्या श्राद्ध करेगा? संसार रखने के लिए आज श्राद्ध किया। फटाफट, जल्दी—जल्दी काम निपटे, तो वह असली जगह पर जाए — वेश्या के पास। वेश्या भी जानती है आज इसके पिता का श्राद्ध है — बहुत बड़ा दिन है, साल में एक बार ही आता है। आज इसके आने पर इतनी भरी हुई थी कि फूट पड़ी, “धिक्कार है तुझ पर, तेरे जैसे पुत्र ने पिता के घर जन्म न लिया होता तो अच्छा होता। तेरे कर्म कुत्सित घृणित, मैं तुझ से घृणा करती हूँ, क्या दिखता है तुझे इस शरीर में ? यह हाड माँस का पुतला, गंदगी से भरा हुआ शरीर, क्या दिखता है तुझे इसमें ? यह भी नरक है तू भी नरक की तैयारी कर रहा है, शर्म कर तू ! तू निर्लज्ज हो गया है इत्यादि इत्यादि।” जो कुछ उसके मुख में आया। आज यूँ लगा कि वह स्वयं नहीं बोल रही परमात्मा उसके अन्दर बोल रहा है। आज उस भद्रतनु के कुछ सुसंस्कार उभरने वाले हैं। अब तक तो कुसंस्कार उभरे हुए थे, अब खत्म हो गए लगते हैं। तो आज सुसंस्कार उभरने की बारी आई है, जो कुछ वेश्या के मुख में आया उसने, उगल दिया। आज भद्रतनु हिला है। यह एक घटिया नारी, मैं ब्राह्मण, मेरे से अधिक ज्ञानी है। चरणों में प्रणाम किया उसके बाद कभी मुख नहीं देखा।

परमात्मा की कृपा का शुभारम्भ हो गया। बुराई से पाँव मुड़ गए और भलाई की ओर पाँव मुड़ गए, यात्रा शुरु हो गई।

(परम पूजनीय महाराज जी के प्रवचन, 14-6-12 मनाली)

## प्रथम दर्शन

(सत्य साहित्य में प्रथम दर्शन के अन्तर्गत लेखों का यह अगला संस्मरण है)

घर परिवार तथा स्कूल में आध्यात्मिक वातावरण प्राप्त होने के कारण मेरी रुचि भी इस ओर बचपन से ही जागृत हो गई थी। सन् 1957 में जब मैं केवल 21 वर्ष का था और अपनी Engineering की पढ़ाई ग्वालियर में रह कर रहा था तब मेरा सम्पर्क आदरणीय श्री देवेन्द्र सिंह बेरी जी से हुआ। मैं ग्वालियर में रहता था और श्री बेरी पास ही निवास करते थे। मैं पढ़ाई के साथ साथ दिन में P.W.D. के दफ्तर में काम करता था। इसी दफ्तर में श्री बेरी जी से मेरी मुलाकात हुई। उन्होंने मुझे अपने घर पर होने वाले साप्ताहिक सत्संग में आने के लिए प्रेरित किया, जब मैं नियमित रूप में सत्संग में जाने लगा तो एक दिन उन्होंने मुरार में भाई दूज से आरम्भ होने वाले साधना सत्संग में सम्मिलित होने के लिए भी प्रेरित किया और श्री स्वामी जी महाराज के विषय में जानकारी दी।

प्रभु प्रेरणा से मुझे श्री स्वामी जी के दर्शन करने की उत्कण्ठा हुई और मैंने साधना सत्संग में शामिल होने की रज़ामन्दी प्रकट कर दी। दिनांक 23 नवम्बर 1957 को प्रातः लगभग 9 बजे से आरम्भ होने वाली बैठक में मुझे अन्य साधकों के साथ ही नाम दीक्षा प्राप्त हुई तथा परम पूजनीय श्री स्वामी जी महाराज के शुभ दर्शन पा कर मैं कृतार्थ हुआ। नाम दीक्षा के समय जब स्वामी जी महाराज ने अपने अँगूठे से मेरे मस्तक को छूआ तो मुझे ऐसा महसूस हुआ कि मुझे करन्ट सा लग रहा हो। उसके पश्चात् मुझे साधना सत्संग में जो आनन्द प्राप्त हुआ वह अवर्णनीय है।

उसी दिन रात को जाप में मेरी ड्यूटी 12 बजे से 1 बजे तक लगाई गई थी क्योंकि उस साधना सत्संग में स्वामी जी के समय में महिलाएँ शामिल नहीं होती थीं और पुरुष साधक कम होने के कारण केवल दो-दो की संख्या में जाप में बैठते थे। जाप का समय समाप्त होने के पाँच मिनट पहले, एक साधक उठ कर दूसरी बारी में आने वाले साधकों को जगा देता था। जब बारी के साधक आ कर बैठ जाते थे तो पिछली बारी के साधक उठ कर जा सकते थे।

इस साधना सत्संग में, मैं किसी को भी पहचानता नहीं था। अतः मैंने अपनी बारी से पहले की बारी के एक साधक से सम्पर्क किया और उसको मुझे 12 बजे से

पहले जगाने को कह दिया। उसने मुझे समय पर उठा दिया और मैं ठीक 12 बजे जाप के कमरे में जा कर बैठ गया। मेरे से पहले बैठा हुआ साधक मेरे पहुँचने पर उठ कर चला गया। भगवान की लीला के वशीभूत हो कर मेरा दूसरा साथी जाप में नहीं आया। मैं अकेला होने के कारण उठ कर नहीं जा सकता था। उसके पश्चात् अगले दो बारियों के साधक भी जाप में न पहुँच सके। और मुझे रात को 12 बजे से 3 बजे तक जाप में बैठने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ। जब तीन से चार बजे तक की बारी के साधक आए तब मैं जाप के कमरे से बाहर आया।

अगले दिन प्रातः कालीन सभा में श्री स्वामी जी महाराज को इस घटना की जानकारी प्राप्त हुई तथा उन्होंने दोषी साधकों को दण्डित करने का निर्णय लिया और बार-बार कहा कि दोषियों को दण्ड अवश्य मिलेगा। वहाँ पर हर साधक का हृदय काँप रहा था कि स्वामी जी महाराज दोषियों को क्या दण्ड देंगे, परन्तु सभी को यह सुन कर संतोष हुआ कि स्वामी जी का दण्ड देने में भी साधक का कल्याण छुपा हुआ है। उन्होंने दोषियों को कहा कि आपको प्रति दिन 20000 जाप की बजाय 40000 जाप करना होगा। स्वामी जी के इस प्रकार के निर्णय से यह साफ झलकता है कि वे हमेशा अपने शिष्यों का हित ही सोचते थे। साधकों का कल्याण और मंगल भावना ही उनका उद्देश्य होता था। हम ऐसे संत की शरण ग्रहण कर, अपने आप को बड़भागी और गौरवान्वित महसूस करते हैं।

साधना सत्संग की समाप्ति पर जब स्वामी जी सभी साधकों को गले मिल रहे थे उस क्षण भी जब वह मेरे से गले मिले तो मुझे उनके शरीर से करंट जैसा लगा और मुझे विशेष प्रकार के आनन्द और सुख की अनुभूति हुई। उसके पश्चात् 1958 एवं 1959 में भी मैंने स्वामी जी के सान्निध्य में मुरार में होने वाले सत्संगों में भाग लिया।

हमें अपने गुरुजनों की आज्ञा का पालन करके अपने जन्म को सार्थक बनाने में कोई कसर नहीं छोड़नी चाहिए और अपना जाप करते रहना चाहिए। आज भी जब मैं स्वामी जी महाराज के प्रथम दर्शन को याद करता हूँ तो गद्गद् हो जाता हूँ। जय गुरुदेव। ■



## श्रीरामशरणम् : एक ऐतिहासिक विवरण

(सत्य साहित्य में श्रीरामशरणम् : एक ऐतिहासिक विवरण के अर्न्तगत लेखों का यह अगला संस्मरण है। सब से पहला श्रीरामशरणम् हरिद्वार में 1957 में, दूसरा दिल्ली में 1962 में, और यह तीसरा सांपला में 1968 में निर्मित हुआ।)

सांपला हरियाणा में एक छोटा सा गाँव और अनाज मंडी के मेल से बना एक छोटा सा कस्बा था। यहाँ पर भारत वर्ष की आज़ादी से पूर्व ही परम पूज्य श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज सरस्वती प्रति वर्ष कुछ सप्ताह के लिए अपने एक प्यारे शिष्य चौधरी मेहर सिंह जी के निवास स्थान पर पधारते थे और प्रति दिन सुबह और शाम सत्संग होता था। उनका ठहरने का कक्ष मुख्य प्रवेश द्वार पर ऊपर बने चौबारे पर होता था, जहाँ वे लोगों से प्रतिदिन मिलते थे और नाम दीक्षा होती थी। सत्संग खुले आँगन में होता था। इस इलाके के लोग धीरे-धीरे दीक्षित होने लग गए। इनमें से बहुत से स्वतन्त्रता संग्राम में जेल भी गए जिसका विवरण *प्रवचन पीयूष* (p.405) में मिलता है। पहले-पहले स्वामी जी महाराज के समय में साधना सत्संग भी लगता था, पर वहाँ स्थान के अभाव के कारण बाद में नज़दीक के गाँव देवत नांगल में चौधरी मेहर सिंह जी के भट्टे में लगने लग गया।

पूज्य स्वामी जी के समय से ही सबकी यह इच्छा थी कि यहीं पर एक सत्संग भवन बन जाए, जो समय धन के अभाव से पूरी नहीं हो पाई। प्रेरणा तो परम पूज्य श्री स्वामी जी के काल में ही उनकी अनुमति से हो गई थी। दिल्ली में श्री रामशरणम् में चौधरी मेहर सिंह जी के भट्टे से ईंटें आई थी जो उन्होंने बड़े प्रेम और आग्रहपूर्वक भेंट की थीं। परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज की अनुमति और आशीर्वाद से नित्य के सत्संग के लिए सत्संग भवन का निर्माण 1966 में शुरु हो गया। पहले इसी स्थान पर आँगन में स्वामी जी महाराज नित्य सत्संग व प्रवचन से सब साधकों को कृतार्थ करते थे।

जाप के लिए नीचे भूमिगत कक्ष बना और ऊपर एक हॉल। बगल में परम पूज्य श्री महाराज जी के लिए कमरा बना। साथ में ही अन्य साधकों के ठहरने के लिए भी कमरे बन गए। 1968 के शुरु में यह बन कर तैयार हो गया। सब कुछ गुरुदेव प्रेम जी महाराज के

निर्देश के अनुसार ही हुआ। उद्घाटन के लिए 30 अप्रैल 1968 का दिन निश्चित किया गया। कार्यक्रम की रूपरेखा तय कर के पूज्य श्री महाराज जी से अनुमति ली गई व सब को निमन्त्रण दिया गया। इस कार्यक्रम के लिए दूर-दूर से साधकवृन्द आकर सम्मिलित हुए।

इससे पूर्व 15 अप्रैल से एक करोड़ से अधिक जाप के संकल्प के साथ अखंड जाप शुरू कर दिया गया जिसकी पूर्णाहुति प्रातः 7 से 7:15 तक हुई, इसके पश्चात् दुर्गा सप्तशती का पाठ व हवन किया गया। इसके पश्चात् 8 से 9 बजे तक हाल के बाहर श्री अमृतवाणी का पाठ व सत्संग हुआ तथा तत्काल बाद 9 बजे पूज्य श्री महाराज जी ने सत्संग हॉल का विधिवत् उद्घाटन किया, फीता काट कर सब के साथ प्रवेश किया। उसके बाद श्री महाराज जी का प्रवचन हुआ और कुछ समय भजन कीर्तन हुआ।

परम पूज्य श्री महाराज जी ने सबको निरहंकार होकर,

मान बड़ाई की कामना त्याग कर परमेश्वर श्री राम के नाम का निरन्तर जाप करने के लिए व श्री स्वामी जी महाराज के दिखाए गए मार्ग पर चलने के लिए कहा। इस स्थान को आशीर्वाद स्वरूप भेंट देते हुए कहा कि, जो कोई भी साधक यदि कोई शुभ इच्छा लेकर के यहाँ सत्संग में सम्मिलित होकर जाप ध्यान करेगा, उसकी इच्छा यदि अनुचित न हुई तो जरूर पूरी होगी, उसको परमेश्वर का आशीर्वाद लाभ होगा।

इसके बाद भंडारा प्रसाद का कार्यक्रम हुआ। अपराह्न 3:30 से 4:30 बजे तक श्री रामायण पाठ व भजन कीर्तन हुआ। इस प्रकार उद्घाटन के अवसर पर पूरा दिन सत्संग का कार्यक्रम रहा। हरियाणा, पंजाब, दिल्ली व मध्यप्रदेश आदि के अनेक साधकगण इस कार्यक्रम में शामिल हुए, जिनमें बाहर के कुछ साधक तो कुछ एक दिन पहले आकर जाप में भी शामिल हुए। तब से हर वर्ष देवतानांगल पर लगने वाला पंचरात्रि सत्संग सांपला के इस भवन में लगना आरम्भ हुआ। ■

## अनुभूतियाँ

### राम जाप की लीला व गुरुजनों की कृपा



स्वामी जी महाराज की साधना पद्धति में तीन बातों को प्रमुखता दी गई है। श्री अमृतवाणी पाठ, ध्यान व जाप। इस में जाप को प्रमुख स्थान दिया गया है। जाप का प्रभाव बहुत प्रबल है। एक साधक विदेश की नौकरी छोड़ कर माता-पिता के पास वापिस आ गए, वह नित्य सुबह सत्संग आते थे। एक दिन उनकी तबीयत पार्क में खराब हो गई और वे बेहोश हो गए। पता चला कि उन्हें ब्रेन हैमरेज हो गया। हालत नाजुक थी इसलिए उन्हें हस्पताल में वेंटिलेटर पर रखा गया। परन्तु उनकी हालत दिन पर दिन खराब होती जा रही थी। ऐसे में उनके लिए जाप आरम्भ किया गया। जैसे-जैसे जाप की संख्या बढ़ती जा रही थी उनकी दशा में बदलाव आने लगा। जो डॉक्टर सुधार की उम्मीद छोड़ते जा रहे थे, वे हैरान थे। राम-नाम जाप के प्रबल प्रभाव से तीन-चार माह में उनके स्वास्थ्य में सुधार होने लगा। थोड़ा स्वस्थ होने पर वह परिवार के साथ श्री रामशरणम् आए। राम जाप की लीला व गुरुजनों की कृपा के कारण ही ऐसा संभव हो सका। ■



परम प्रभु श्री राम और श्रद्धेय गुरुजनों की कृपा प्रसाद से ग्वालियर सत्संग में जाने का अवसर मिला। उस पंच-रात्रि सत्संग में सहज, सरल, आनन्द मूर्ति परम पूज्य श्री प्रेम जी महाराज का दर्शन और पावन सान्निध्य प्राप्त हुआ।

सत्संग की विभिन्न बैठकों में परम पूजनीय प्रेम जी महाराज के सहज सरल मितभाषी रूप का परिचय मिला। पर उनके विलक्षण साधना प्रभाव का परिचय तब मिला जब सत्संग के दौरान एक युवा साधक शीत के प्रकोप से तेज ज्वर से पीड़ित हुए। उन दिनों भी ग्वालियर सत्संग नवम्बर दिसम्बर की तेज ठिठुरती सर्दी में होते रहे हैं। प्रबन्धक श्री उन्हें वापिस भेजने का विचार कर रहे थे। तभी देखा कि अर्द्धरात्रि परम पूज्य श्री प्रेम जी महाराज अचानक उन साधक के बिस्तर के समीप आकर बैठ गए। हम लोगों का गुप रात्रि कालीन अखण्ड जाप की पारी में जाने की तैयारी कर रहा था। श्री महाराज जी कुछ देर वहाँ बैठ कर चले गए। सुबह पता लगा वह साधक बिल्कुल ठीक हैं। सहर्ष सभी कार्यक्रमों में भाग लिया। ■

## विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम (सितम्बर से दिसम्बर 2019)

### साधना सत्संग, खुले सत्संग, उद्घाटन एवं नाम दीक्षा का विवरण

- **गुरदासपुर**, पंजाब में 20 से 22 सितम्बर तक खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 176 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ली।
- **सिडनी**, आस्ट्रेलिया में 28 से 29 सितम्बर तक खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 1 व्यक्ति ने नाम दीक्षा ली।
- **हरिद्वार** में 29 सितम्बर से 8 अक्टूबर तक रामायणी सत्संग लगा।
- **जम्मू** में 11 से 13 अक्टूबर तक खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 221 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ली।
- **आलमपुर**, हिमाचल प्रदेश में 20 अक्टूबर को खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 47 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ली।
- **पठानकोट**, पंजाब में 2 से 3 नवम्बर तक खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 163 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ली।
- **कादियां**, पंजाब में 5 नवम्बर को नवनिर्मित श्रीरामशरणम् का उद्घाटन हुआ जिसमें 41 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ली।
- **सवाई डेलाना गांव**, राजस्थान में 9 नवम्बर को नवनिर्मित श्रीअमृतवाणी सत्संग हॉल का उद्घाटन हुआ।
- **अमृतसर**, पंजाब में 10 नवम्बर को 1 दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 75 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ली।
- **हरिद्वार** में 11 से 14 नवम्बर तक परम पूजनीय स्वामी सत्यानन्द जी महाराज के निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में साधना सत्संग लगा।
- **कठुआ**, जम्मू एवं कश्मीर में 17 नवम्बर को 1 दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 72 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ली।
- **ग्वालियर**, मध्यप्रदेश में 22 से 25 नवम्बर तक साधना सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 300 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ली।
- **फाजलपुर**, कपूरथला, पंजाब में 30 नवम्बर से 1 दिसम्बर तक खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 27 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ली।
- **सरदारशहर**, राजस्थान में 5 दिसम्बर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के बाद नाम दीक्षा हुई, जिसमें 386 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ली।
- **भिवानी**, हरियाणा में 7 से 8 दिसम्बर तक खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 11 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ली।
- **उज्जैन**, मध्यप्रदेश में 8 दिसम्बर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के बाद नाम दीक्षा हुई, जिसमें 315 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ली।
- **होशंगाबाद**, मध्यप्रदेश में 9 दिसम्बर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के बाद नाम दीक्षा हुई, जिसमें 185 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ली।
- **सुजानपुर**, पंजाब में 13 से 15 दिसम्बर तक खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 142 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ली।
- **बाग**, जिला धार, मध्यप्रदेश में 16 दिसम्बर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के बाद नाम दीक्षा हुई, जिसमें 5273 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ली।
- **बोलासा**, झाबुआ, मध्यप्रदेश में 17 दिसम्बर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के बाद नाम दीक्षा हुई, जिसमें 2191 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ली।
- **कल्याणपुरा**, झाबुआ, मध्यप्रदेश में 18 दिसम्बर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के बाद नाम दीक्षा हुई, जिसमें 9072 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ली।

- **सूरत**, गुजरात में 21 से 22 दिसम्बर तक खुले सत्संग का आयोजन हो रहा है जिस में 22 दिसम्बर को नाम दीक्षा होगी।
- **फरीदाबाद**, अमृतवाणी सत्संग हॉल का उद्घाटन परम पूजनीय श्री महाराज जी ने अपने कर कमलों से 25 दिसम्बर 1999 को किया था, वहाँ हर वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी 16 दिसम्बर से 25 दिसम्बर तक अखण्ड जाप का आयोजन किया गया।
- **होशियारपुर**, पंजाब में 29 दिसम्बर को एक दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हो रहा है जिसमें नाम दीक्षा होगी।
- **दिल्ली**, श्रीरामशरणम् में सितम्बर, अक्तूबर एवं नवम्बर में 47 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

### श्रीरामशरणम् उद्घाटन एवं निर्माणाधीन श्रीरामशरणम् की प्रगति

- **पुणे**, महाराष्ट्र में 18 जनवरी शनिवार को नवनिर्मित श्री अमृतवाणी सत्संग हॉल का उद्घाटन होना निश्चित हुआ है।
- **रायपुरिया**, झाबुआ, मध्यप्रदेश में श्रीरामशरणम् भवन का निर्माण कार्य अन्तिम चरण में है। 3 फरवरी सोमवार को नवनिर्मित श्री श्रीरामशरणम् भवन का उद्घाटन होना निश्चित हुआ है।
- **पारा**, झाबुआ, मध्यप्रदेश में श्रीरामशरणम् भवन का निर्माण कार्य अन्तिम चरण में है। 20 फरवरी, गुरुवार को नवनिर्मित श्री श्रीरामशरणम् भवन का उद्घाटन होना निश्चित हुआ है।
- **अमरपाटन**, मध्यप्रदेश में श्रीरामशरणम् भवन का निर्माण कार्य तेज़ी से चल रहा है। 1 मार्च, रविवार को नवनिर्मित श्री श्रीरामशरणम् भवन का उद्घाटन होना निश्चित हुआ है।
- **उमरकोट**, झाबुआ, मध्यप्रदेश में श्रीरामशरणम् भवन का निर्माण कार्य तेज़ी से चल रहा है। 18 मार्च बुधवार को नवनिर्मित श्री श्रीरामशरणम् भवन का उद्घाटन होना निश्चित हुआ है।
- **धारीवाल**, पंजाब में श्रीरामशरणम् भवन का निर्माण कार्य तेज़ी से चल रहा है। ■



### जन्म शताब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में कार्यक्रम

परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज के जन्म शताब्दी वर्ष का शुभारम्भ 2 अक्तूबर 2019 से हो गया है।

वर्ष भर इसे पूर्ण उत्साह और उमंग के साथ अधिक से अधिक साधना करते हुए मनाए जाने का संकल्प कई श्री रामशरणम् केन्द्रों द्वारा लिया गया है।

श्रीरामशरणम् दिल्ली में पूरे वर्ष, हर महीने होने वाले श्री रामायण जी के अखण्ड पाठ का कैलेण्डर (जो श्रीरामशरणम् की web.site पर है) तैयार किया गया है।

इसके अनुरूप अन्य केन्द्रों पर भी स्थानीय परिस्थितियों को देखते हुए, हर महीने श्री स्वामी जी महाराज के सद्ग्रन्थों के पाठ, अखण्ड जाप और सवा करोड़ के जाप का विशेष आयोजन रखा जा सकता है।

व्यक्तिगत रूप से भी साधकों को इस पुण्य पर्व के अवसर पर विशेष साधना साधने का संकल्प लेना चाहिए। जैसे सवा करोड़ नाम जाप संकल्प। गुरुजनों की आज्ञानुसार अपनी दिनचर्या को साधनामय बनाना और उसी के अनुसार जागना, आहार-विहार, ध्यान, जाप, स्वाध्याय आदि करने का संकल्प लेना चाहिए।

### सूचना

श्री रामशरणम् की त्रैमासिक पत्रिका सत्य साहित्य को सभी साधक अब Subscribe कर सकते हैं। इसके लिए Subscription form श्री रामशरणम् की website पर उपलब्ध है। इसके लिए साधक तीन वर्ष का शुल्क सीधे बैंक के खाते में जमा कर सकते हैं। जिसका पूरा विवरण भी website पर उपलब्ध है।

Open Satsang in Year 2020		
Jhabua	5 to 7 January	Sunday to Tuesday
Bikaner	18 to 19 January	Saturday & Sunday
Mumbai	25 to 26 January	Saturday & Sunday
Pilibanga	1 to 2 February	Saturday & Sunday
Bilaspur	21 to 23 February	Friday to Sunday
Delhi (Holi)	8 to 10 March	Sunday to Tuesday
Jhabua (Maun Sadhna)	24 March to 2 April	Tuesday to Thursday
Mandi	12-Apr	Sunday
USA	26 to 28 June	Friday to Sunday
Delhi	27 to 29 July	Mon to Wed
Rohtak	15 to 16 August	Saturday & Sunday
Ratangarh	22 to 23 August	Saturday & Sunday
Jammu	25 to 27 Sep	Friday to Sunday
Delhi	30 Sep to 3 Oct	Wed to Sat
Gurdaspur	9 to 11 October	Friday to Sunday
Pathankot	31 Oct to 1 Nov	Saturday & Sunday
Hisar	7 to 8 Nov	Saturday & Sunday
Kapurthala	21 to 22 Nov	Saturday & Sunday
Bhiwani	5 to 6 Dec	Saturday & Sunday
Surat	19 to 20 Dec	Saturday & Sunday
Hoshiarpur	27 December	Sunday

Naam Deeksha in Other Centres (January to December 2020)			
2	January	Thursday	Kushalgarh, Rajasthan
3	January	Friday	Kupda, Banswara, Rajasthan
4	January	Saturday	Dahod, Gujarat
5	January	Sunday	Jhabua, MP
12	January	Sunday	Indore, MP
18	January	Saturday	Pune, Maharashtra
19	January	Sunday	Bikaner, Rajasthan
26	January	Sunday	Mumbai, Maharashtra
2	February	Sunday	Pilibanga, Rajasthan
2	February	Sunday	Ratlam, MP
2	February	Sunday	Rohtak, Haryana
3	February	Monday	Raipuria, Jhabua, MP
9	February	Sunday	Hansi, Haryana
16	February	Sunday	Patiala, Punjab
20	February	Thursday	Para, Jhabua, MP
23	February	Sunday	Bilaspur, HP
1	March	Sunday	Amarpatan, MP
18	March	Wednesday	Umarkot, Jhabua, MP
12	April	Sunday	Mandi, HP
13	April	Monday	Jawali, HP
28	June	Sunday	Salisbury, USA
23	August	Sunday	Ratangarh, Rajasthan
30	August	Sunday	Jalandhar, Punjab
27	September	Sunday	Jammu
11	October	Sunday	Gurdaspur, Punjab
1	November	Sunday	Pathankot, Punjab
8	November	Sunday	Hisar, Haryana
22	November	Sunday	Kapurthala, Punjab
27,28,29	November	Fri, Sat, Sun	Gwalior, MP
6	December	Sunday	Bhiwani, Haryana
20	December	Sunday	Surat, Gujarat
27	December	Sunday	Hoshiarpur, Punjab

Sadhna Satsang in Year 2020		
Indore	10 to 13 January	Friday to Monday
Hansi	7 to 10 February	Friday to Monday
Haridwar	13 to 16 March	Friday to Monday
Haridwar	4 to 9 April	Saturday to Thursday
Haridwar	30 June to 5 July	Tuesday to Sunday
Haridwar (Ramayani)	16 to 25 October	Friday to Sunday
Haridwar	11 to 14 November	Wednesday to Saturday
Gwalior	27 to 30 November	Friday to Monday

Poornima (January to December 2020)		
January	10	Friday
February	9	Sunday
March	9	Monday
April (Chaitra Purnima)	8	Wednesday
May	7	Thursday
June	5	Friday
July (Guru Purnima)	5	Sunday
August	3	Monday
September	2	Wednesday
October	1	Thursday
October	31	Saturday
November	30	Monday
December	30	Wednesday

Deeksha in Shree Ram Sharnam Delhi (January to April 2020)			
January	26	Sunday	11.00 AM
February	16	Sunday	11.00 AM
March	22	Sunday	11.00 AM
April	19	Sunday	10.30 AM

Ramayan Paath in Delhi (January to April 2020) For Centenary Birth Celebrations		
January	25	Saturday
February	22	Saturday
March	15	Sunday
April	25	Saturday

## Kuber's Feast: The Perils of Arrogance

In Hindu mythology, Kuber is the God of never-diminishing wealth. Once Kuber became arrogant and wanted to show off his great wealth by hosting an extravagant feast for the Gods and humans. Great preparations started. A big hall was built, the world's best cooks prepared the food and grand decorations were put up.

To impress everyone he also invited Lord Shiva. Lord Shiva agreed to send his young son Ganesha instead. On the day of the feast, thousands of guests arrived. Everyone was excited to see Lord Shiva's son Ganesha. Ganesha was hungry, so as soon as he entered, he wanted to eat. Food was hurriedly brought out for him. He quickly ate and then asked for more. He had a large second helping and then a third and even a fourth, but his appetite remained undiminished. Kuber ordered cooks to produce more food, but they could not keep pace with Ganesha's eating frenzy. The Elephant-God was quickly consuming whatever food was being prepared 'Give me more, give me more', he asked!

Kuber was distraught. He just did not know what to do. Soon the entire meal which had been prepared for thousands of guests was consumed by Ganesha alone. None of the guests had started eating yet! An annoyed

and still hungry Ganesha admonished Kuber: 'Do you call this a feast? There is no food here. I am still hungry. I am going home.'

An embarrassed Kuber pleaded with him to be patient, but young Ganesha left. Fearing the wrath of Lord Shiva, Kuber followed Ganesha home. Ganesha complained to his father. 'What is this I hear, Kuber? Did you organize a feast without food?' Lord Shiva asked Kuber.

Kuber realized that this whole episode had occurred because Shiva wanted him to understand the perils of arrogance. He regretted his behavior. Soon Lord Shiva forgave him and Kuber promised to never be arrogant again.

### अतिशय विनम्र अनुरोध

इस वर्ष 2 अक्टूबर 2020 को परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज की जन्म शताब्दी का महोत्सव होगा। उसके उपलक्ष्य में सत्य साहित्य का एक विशेष अंक तैयार करने की योजना है। अगर आपके पास कोई चित्र, पत्र एवं अनुभूतियाँ हैं, तो कृपया आप श्रीरामशरणम्, 8ए, रिंग रोड लाजपत नगर-4 नई दिल्ली - 110024 के पते पर भेज सकते हैं। परम पूजनीय प्रेम जी महाराज के पत्रों की आप फोटो कापी भेज सकते हैं। ई-मेल भी कर सकते हैं।

यदि आप 'सत्य साहित्य' की इस प्रति को नहीं रखना चाहते,  
तो कृपया इसे अपने स्थानीय केन्द्र या निकटतम श्रीरामशरणम् को लौटा दें।

प्रकाशक मुद्रक श्री अनिल दीवान द्वारा श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, 8 ए रिंग रोड, लाजपत नगर-IV नई दिल्ली. 110024 से प्रकाशित  
एवं रेच स्कैनस प्राइवेट लिमिटेड, ए-27, नारायणा औद्योगिक एरिया, फेज 2, नई दिल्ली 110028 से मुद्रित। संपादक: मेधा मलिक कुदेसिया एवम् मालविका राय

Publisher and printer Shri Anil Dewan for Shree Swami Satyanand Dharmarth Trust, 8-A Ring Road, Lajpat Nagar IV, New Delhi 110024 and  
printed at Rave Scans Private Limited, A-27, Naraina Industrial Area, Phase 2, New Delhi 110028. Editors: Medha Malik Kudaisya and Malvika Rai.

©श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, नई दिल्ली

ईमेल: shreeramsharnam@hotmail.com

वेबसाइट: www.shreeramsharnam.org